वानिकी समाचार

(अर्द्धवार्षिक)

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून

वर्ष – 1 | जनवरी – जून 2009 | अंक – 1

माननीय राज्य मंत्री श्री जयराम रमेश, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार) प्रमंडल कक्ष में सभा को संबोधित करते हुए

माननीय राज्य मंत्री श्री जयराम रमेश, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार) का भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् और उसके संस्थानों का भ्रमण

माननीय राज्य मंत्री श्री जयराम रमेश, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार (स्वतंत्र प्रभार) ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् तथा वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून का 2 जून 2009 को भ्रमण किया। जिसके दौरान उनको परिषद् की गतिविधियों आदि से अवगत कराया गया, खनन क्षेत्र में अखिल भारतीय समन्वित परियोजना को शुरू करने के संबंध में तथा संस्थान के कुछ अनुसंधान केन्द्रों के सुदृढ़िकरण पर विचार–विमर्श किया गया। माननीय मंत्री ने काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरू का भी 10 जून 2009 को भ्रमण किया तथा संस्थान में रूद्राक्ष के पौधे का रोपण किया।

माननीय मंत्री रूद्राक्ष के पौधे का रोपण करते हुए

अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं/बैठकों में परिषद् की भागीदारी

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून तथा वर्षावन राष्ट्र समूह द्वारा "राष्ट्रीय वन तालिका: नॉन एनेक्स 1 देशों का अनुभव" पर 27–29 अप्रैल 2009 तक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन परिषद सभागार, देहरादून में किया गया। कार्यशाला में 32 देशों से 61 प्रतिनिधि तथा 6 अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से विशेषज्ञ शामिल हुए। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य विकासशील देशों के विशेषज्ञों को वनों के कार्बन स्टॉक को मापने तथा अन्य संबंधित विकल्पों पर तकनीकी दृष्टिकोण को बेहतर बनाने आदि पर मार्गदर्शन प्रदान करना था।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के प्रतिनिधि के रूप में श्री जगदीश किशवान, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. तथा श्री वी.आर.एस. रावत वैज्ञानिक–डी, जैव विविधता एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग, भारत सरकार के प्रतिनिधि मंडल के साथ एस.बी.एस.टी.ए./एस.बी.आई. के 30वें सत्र में, ए.डब्ल्यू.जी.– एल.सी.ए. के छठे सत्र में तथा ए.डब्ल्यू.जी.–के.पी. के आठवें सत्र

की बैठक में 1 से 12 जून 2009 तक बॉन, जर्मनी में सम्मिलित हुए।

डॉ. रेनू सिंह, प्रमुख, जैव विविधता एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने ''भूमि क्षेत्र परिवर्तन मूल्यांकनः वर्तमान परिचालन प्रणाली का अनुभव'' पर साओपॉलो, ब्राजील में 4–6 फरवरी 2009 तक अन्तर्राष्ट्रीय तकनीकी कार्यशाला में हिस्सा लिया।

कार्यशाला में दूरवर्ती आंकड़ों का प्रयोग करके भूमि आवरण तथा भूमि उपयोग परिवर्तन का पता लगाने के संबंध में चर्चा

डॉ. रेनू सिंह, भा.वा.अ.शि.प., तथा श्रीमती राजश्री रे, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय अंतर्राष्ट्रीय तकनीकी कार्यशाला के दौरान साओपॉलो, ब्राजील में

की गई। कार्यशाला का उद्देश्य विकासशील देशों के विशेषज्ञों को वन उपयोग में परिवर्तन के कारण वन भूमि के आवरण परिवर्तन को पता लगाने के लिए तकनीकी तथा वैज्ञानिक कार्यविधि के बारे में तथा कार्बन के घनत्व के बारे में जानकारी देना था।

श्री जगदीश किशवान, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. को मिनिस्ट्री ऑफ फिजिकल प्लानिंग, लैण्ड एंड फॉरेस्ट मैनेजमेंट ऑफ दी रिपब्लिक ऑफ सूरीनाम द्वारा 13 मार्च 2009 को पारामारिबो, सूरीनाम में ''आर ई डी डी समझौता : उच्च वनावरण निम्न निर्वनीकरण देशों का केस'' संगोष्ठी में भाग लेने और सूरीनाम के वरिष्ठ अधिकारियों एवं समझौताकर्ताओं के समक्ष प्रस्तुतिकरण के लिए आमंत्रित किया गया। इसका उद्देश्य एस बी एस टी ए एजेन्डा मद–5– विकासशील देशों में निर्वनीकरण से उत्सर्जन घटाना : कार्रवाई प्रेरित करने के लिए एप्रोच के इतिहास, एस बी एस टी ए और ए डब्ल्यू जी–एल सी ए में तकनीकी, कार्यपद्धति एवं नीति पहलुओं से संबंधित जारी समझौते और यू एन एफ सी सी सी के तहत जारी प्रक्रिया में एच एफ एल डी देशों के लिए संभावित रणनीति के साथ सूरीनाम अधिकारियों को संवेदी बनाना था। प्रस्तुतिकरण बहुत पसंद किया गया और इसके बाद गहन प्रश्न–उत्तर सत्र का आयोजन हुआ।

श्री दी.आर.एस.रावत, वैज्ञानिक–डी ने 23 और 24 मार्च 2009 को ''संदर्भ उत्सर्जन स्तर तथा संदर्भ स्तर'' से संबंधित कार्यप्रणाली विषय पर यू.एन.एफ.सी.सी.सी. के विशेषज्ञों की बैठक में बॉन, जर्मनी में हिस्सा लिया।

कार्यशाला/संगोष्ठी/बैठक

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में 22 और 23 अप्रैल 2009 को ''सतत् पोषणीय वन प्रबन्धन के अनुश्रवण, आकलन और प्रस्तुतिकरण के क्रियान्वयन हेतु संस्थागत क्षमताओं के सशक्तिकरण और लाभार्थियों की भागीदारी'' विषय पर एक

''सतत् पोषणीय वन प्रबंधन पर राष्ट्रीय कार्यशाला का उदघाटन करते डॉ. एस.एस. नेगी, निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून

राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें विश्व खाद्यय एवं कृषि संगठन के प्रतिनिधियों के अलावा देश के विभिन्न राज्यों के वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों एवं विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला में सतत् पोषणीय वन प्रबंधन के लिए निर्धारित आधार मानकों एवं सूचकों तथा उनके अनुश्रवण, आकलन और प्रस्तुतिकरण पर गहन मंथन किया गया। इसके अतिरिक्त इस बात पर भी विचार विमर्श किया गया कि सतत् पोषणीय वन प्रबंधन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु लाभान्वित होने वाली संस्थाओं तथा व्यक्तियों की इसमें भागीदारी कैसे सुनिश्चित की जाय।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा 17 से 19 मार्च 2009 तक संस्थान में "बांस के रोपण, प्रबंधन एवं इसकी उपयोगिता" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। श्री एस.के.पाण्डे, भा.व.से.(से.नि.), पूर्व महानिदेशक एवं विशेष सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर लोकेश कुमार शेखावत, कुलपति, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर ने की।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा ''लवण प्रभावित मृदाओं का वनरोपण द्वारा प्रबंधन विषय'' पर एक दिवसीय कार्यशाला वन चेतना केन्द्र, हारिज, पाटन, गुजरात में 25 फरवरी 2009 को आयोजित की गई। इस कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य आफरी, जोधपुर द्वारा गंगाणी में 1997 में लवण

प्रभावित शुष्क मृदाओं हेतु वनरोपण एवं पौधरोपण तकनीक के परिणाम एवं निष्कर्षों का प्रस्तुतीकरण करना था। कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. आर. एल. श्रीवास्तव, भा.व.से., निदेशक, आफरी ने की। डॉ. एम. एल. शर्मा, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, गुजरात मुख्य अतिथि थे। उत्तरी गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन के प्रतिनिधियों; सहायक वन संरक्षक; क्षेत्रीय वन अधिकारी; वनपाल एवं संस्थान के प्रतिनिधियों इत्यादि 58 सहभागियों ने

लवण प्रभावित मृदाओं का वनरोपण द्वारा प्रबंधन विषय पर आयोजित कार्यशाला के सहभागी

कार्यशाला में भाग लिया। सहभागियों को हारिज से 60 कि.मी. दूर कोरध प्रायोगिक स्थल ले जाया गया तथा वहाँ लगाए गए अभिप्रयोगों का भ्रमण करवाया गया। सभी सहभागी **अकेशिया एम्प्लीसेप्स, ए. बावीनोसा** तथा **सल्वाडोरा पर्सिका** की वृद्धि व उत्तरजीविता से अत्यंत प्रभावित हुए।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा 'जैव ईंधन–क्षमता एवं चुनौतियाँ' विषय पर 25 और 26 फरवरी 2009 को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में देश के विभिन्न क्षेत्रों में जैव–ईंधन पर हो रहे अनुसंधान एवं विकास कार्यों पर वैज्ञानिकों / शोधकर्ताओं द्वारा शोधपत्र प्रस्तुत किए गए।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा 22 मई 2009 को पणधारियों (stakeholders) की गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें राज्य वन विभाग के अधिकारियों एवं गैर–सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, भारत सरकार से वित्तीय सहायता प्राप्त परियोजना ''उत्तरी–पश्चिमी हिमालय (हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखण्ड) क्षेत्रों में करू एवं निहाणी'' के अन्तर्गत 23 जनवरी 2009 को श्रेष्ठ पौधों की पहचान एवं जनसंख्या अनुमान का संचालन कर रहे विभिन्न संस्थानों के वैज्ञानिकों की एक सभा का आयोजन जे. पी. विश्वविद्यालय, बाकण घाट, सोलन (जो कि इस परियोजना का एक सह–चालक संस्थान है) में किया गया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने औषधीय पौधों में नाशिकीटों की रोकथाम पर 05 फरवरी 2009 को वनमण्डल अधिकारी, पालमपुर के सहयोग से होल्टा, पालमपुर में एक कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें वन विभाग के 40 सहभागियों ने हिस्सा लिया।

औषधीय पौधों में नाशिकीटों की रोकथाम पर कार्यशाला के सहभागी

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने ग्रामीण विकास विभाग के लिए, ''वानिकी अनुसंधान की आवश्यकता'' पर 24 मार्च 2009 को एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में हिमाचल प्रदेश सरकार के वन विभाग; ग्रामीण विकास विभाग; डॉ. वाई. एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी; एन.बी.पी.जी.आर. तथा अन्य गैर सरकारी संस्थाओं से आए लगभग 40 वरिष्ठ अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने हिमाचल प्रदेश वन विभाग द्वारा निधिबद्ध योजना ''समशीतोष्ण वृक्ष वाटिका तथा वानस्पतिक उद्यान'' के अन्तर्गत गठित सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन 11 मई 2009 को पोटर्स हिल, समर हिल, शिमला में किया। जिसमें विभिन्न विभागों व गैर सरकारी संस्थानों के सदस्यों ने भाग लिया।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट द्वारा 28 मई 2009 को आयोजित पणधारियों की बैठक में पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न राज्यों में वानिकी संबंधित शोध समस्याओं के निराकरण एवं उन पर आधारित शोध के लिये विचार विमर्श किया गया।

व.व.अ.सं., जोरहाट में पणधारियों की बैठक की एक झलक

वन उत्पादकता संस्थान, राँची द्वारा पूर्वी हिमालय एवं इसके सामाजिक – आर्थिक, संयुक्त वन प्रबन्धन और किसानों द्वारा व्यावसायिक खेती करने पर ''औषधीय पौधों का संरक्षण कैसे किया जाय'' विषय पर 05 फरवरी 2009 को सुकना, दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) में एक कार्यशाला का आयोजन

किया गया। संस्थान द्वारा वन अनुसंधान केन्द्र, माण्डर, रांची (झारखण्ड) में ''जट्रोफा कर्कस की खेती एवं उसके महत्व'' के विषय पर 26 फरवरी 2009 को जागरूकता कार्यशाला का भी आयोजन किया।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरु द्वारा 31 जनवरी 2009 को सोमवारपेट में ''वानिकी एवं काष्ठ विज्ञान प्रौद्योगिकी'' विषय पर एक प्रदर्शन कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में कुल 500 अंत्य–उपभोक्ताओं ने हिस्सा लिया।

प्रशिक्षण/प्रदर्शन

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा डा. वाई.एस.परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी में ''प्राकृतिक रंग'' विषय पर 21 जनवरी एवं 20 मार्च 2009 को तथा ''पौधों से पादप रासायनिकी और औषधीय पौधों की प्रक्रिया'' विषय पर 06 मार्च 2009 को प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के द्वारा औषधीय पौधों की कटाई तथा मूल्यवर्धन के बारे में 27 से 30 जनवरी 2009 तक ग्राम श्यामपुर, देहरादून के किसानों को प्रशिक्षण दिया गया।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा बांस के संवर्धन एवं उपयोगिता पर 02 से 06 मार्च 2009 तक पांच दिवसीय तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान के शताब्दी वन विज्ञान केन्द्र (रेन्जर्स कॉलेज) में आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण

बांस के संवर्धन एवं उपयोगिता पर प्रशिक्षण के सहभागी

राष्ट्रीय बाँस मिशन द्वारा निधि पोषित था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 21 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया जिसमें उत्तराखण्ड वन विभाग के वन दरोगा तथा उत्तराखण्ड के चमोली, पौड़ी गढ़वाल, कोटद्वार, चकराता, मसूरी, चम्पावत, हल्द्वानी, अलमोड़ा, नैनीताल, पिथौरागढ़ आदि जिलों से किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षणार्थियों को बाँस वाटिका, विभिन्न प्रकार के प्रयोगशाला एवं संग्राहलय दिखाने के साथ–साथ चौधरी देवीलाल नर्सरी, यमुना नगर (हरियाणा) का भी भ्रमण कराया गया तथा पौधशाला में विशेषज्ञों द्वारा विस्तृत जानकारी दी गयी।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरु द्वारा ''कर्षक/क्रोमोटोग्राफी तकनीक एवं यंत्रीय विश्लेषण'' विषय पर 1 से 3 जनवरी 2009 तक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थान द्वारा कोप्पा वन प्रभाग के वन अधिकारियों के लिए ''पौधशाला व्यवसाय तथा बाँस के कायिक प्रवर्धन'' विषय पर 30 जनवरी 2009 को प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

वन उत्पादकता संस्थान, राँची द्वारा बिरसा प्रौद्योगिकी संस्थान, रांची के विद्यार्थियों को फरवरी 2009 में एक माह की अवधि का ''मृदा परीक्षण एवं विश्लेषण'' पर तकनीकी पर प्रशिक्षण दिया गया।

वन उत्पादकता संस्थान, राँची द्वारा ''वैज्ञानिकी विधि से लाह की खेती कैसे की जाय'' विषय पर डालटेनगंज जिले के गारू गांव के किसानों को 11 से 18 फरवरी 2009 तक प्रशिक्षण दिया गया। संस्थान द्वारा ''वैज्ञानिक विधि के माध्यम से लाह की खेती'' एवं ''लाह बीज फार्म की स्थापना विधि'' विषयों पर खूंटी जिले के कृषकों को भी 18 और 19 मई 2009 को प्रशिक्षण दिया गया।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा "भंगुर मरूस्थल के पारिस्थितिकी तंत्र के सतत विकास हेतु समन्वित दृष्टिकोण'' विषय पर संस्थान में भा.व.से. के अधिकारियों हेतु 09 से 13 फरवरी 2009 तक एक सप्ताह का अनिवार्य प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 27 सहभागी सम्मिलित हुए।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा ''औषधीय पौधों की अन्तर्वर्तीय खेती : ग्रामीण आय की वृद्धि के लिए एक विकल्प'' विषय पर 26 और 27 मई 2009 को एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन, बूणधार, कुल्लू में किया गया। इस प्रशिक्षण में कुल्लू जिला के लगभग 50 किसानों ने भाग लिया।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट ने ''बाँस एवं पंचौली पौधशाला'' विषय पर 21 एवं 22 फरवरी 2009 को दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

राजभाषा

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में 23 और 24 मार्च 2009 को ''हिंदी कार्यशाला'' का आयोजन किया गया। इस

कार्यशाला में संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यशाला में निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की गई–

(1) हिंदी में प्राप्त होने वाले पत्रों का उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दिया जाए।

(2) सभी रबर की मोहरों को द्विभाषी बनाया जाए।

(3) राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का पालन सुनिश्चित किया जाए।

(4) संचिकाओं पर लिखी जाने वाली टिप्पणियों को यथासंभव हिंदी में लिखने का प्रयास किया जाए।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही (जनवरी से मार्च 2009) बैठक 27 मार्च 2009 को आयोजित की गई। बैठक में लिए गये निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई के अनुपालन तथा पिछली बैठक के कार्यवृत्त की समीक्षा की गई।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरु में 26 जनवरी 2009 को आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर राजभाषा नीति से संबंधित विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरु में निदेशक की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें 17 मार्च 2009 तथा 22 जून 2009 को आयोजित की गईं। इसके अन्तर्गत हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गई।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के डॉ. मौ. युसुफ, वैज्ञानिक–ई ने नराकास, जबलपुर द्वारा आयोजित वर्ष 2009 की स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में श्री मनोज भाईक, भा.व.से. की अध्यक्षता में समीक्षा समिति द्वारा 12 जनवरी 2009 को सभा का आयोजन किया गया जिसमें हिन्दी में किए गए कार्यों की समीक्षा की गई। संस्थान के श्री आर. के. शर्मा, हिन्दी अधिकारी और डॉ. राजेश शर्मा, वैज्ञानिक ने मुख्य आयकर आयुक्त, अध्यक्ष, नराकास, शिमला की अध्यक्षता में 11 जून 2009 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

वन विज्ञान केन्द्र

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा वन विज्ञान केन्द्र, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली में 07 मार्च 2009 को विभिन्न उत्पादों की प्रोद्यौगिकी का प्रदर्शन किया गया।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा जनवरी से जून 2009 के मध्य किसानों एवं वनविदों के लिये बाँसों की उपज, महत्व, उपयोग एवं संरक्षण से संबन्धित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन 05 से 09 जनवरी 2009 तक होशियारपुर में, 19 से 23 जनवरी 2009 तक हल्द्वानी में, 09 से 13 फरवरी 2009 तक पिंजोर में, 08 से 12 फरवरी 2009 तक चंडीगढ़ में और 20 से 24 मार्च 2009 तक राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली में स्थित वन विज्ञान केन्द्रों में किया गया।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा वन विज्ञान केन्द्र हल्द्वानी में 22 से 25 जून 2009 तक आयोजित कार्यशाला में एन टी एफ पी पौधों के बारे में वन रक्षकों/किसानों को प्रशिक्षण दिया गया।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरु ने 21 जनवरी 2009 को ''काष्ठ उपयोग तथा सुवाह्य आसवन एकक'' विषय पर वन विज्ञान केन्द्र, काडुगोडी में प्रदर्शन कार्यक्रम तथा 17 फरवरी 2009 को ''पौधशाला तकनीक एवं प्रबंधन'' विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा 19 मार्च 2009 को एफ.आर.सी, हैदराबाद एवं वन विज्ञान केन्द्र, आन्ध्र प्रदेश में ''वानिकी एवं काष्ठ विज्ञान प्रौद्योगिकी'' विषय पर एक प्रदर्शन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरु के निदेशक श्री एस.सी. जोशी ने 14 जनवरी 2009 को वानिकी विस्तार गतिविधियों के क्रम में वन विज्ञान केन्द्र, गोवा का उद्घाटन किया। डॉ. शशिकुमार, मुख्य वन संरक्षक (गोवा), श्री फ्रान्सिस अरूजा, उप वन संरक्षक (से.नि.), तथा श्री पंकज अग्रवाल, प्रमुख (विस्तार) उद्घाटन समारोह में उपस्थित रहे।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा गुजरात राज्य में वन विज्ञान केन्द्र की स्थापना गुजरात वन विभाग के संशोधन केन्द्र, छिपरडी वीडी, राजकोट में 26 फरवरी 2009 को की गई। जिसका शुभारम्भ डॉ. आर. एल. श्रीवास्तव, तत्कालीन निदेशक, आफरी एवं श्री संजय मेहता, वन संरक्षक (सामाजिक वानिकी), राजकोट के कर कमलों से किया गया।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा विकसित 'कृषि वानिकी और कृषि वानिकी सिस्टम' के विषय में 4 फरवरी 2009 को वन विज्ञान केन्द्र, रायपुर, छत्तीसगढ़ में किसानों और वन विभाग के अधिकारियों को तथा ''वन रोपण रोगों एवं उनकी रोकथाम'' विषय पर 9 और 10 जनवरी 2009 को वन विज्ञान केन्द्र, जबलपुर मध्य प्रदेश में राज्य वन विभाग तथा गैर–सरकारी संगठनों के कर्मियों, एवं किसानों को प्रशिक्षण दिया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा वन अनुसंधान के क्षेत्र में आधुनिक तथा वैज्ञानिक तरीकों से किये जा रहे

कार्यों से अवगत कराने के लिये, आदर्श गांव लाणाबाका, जिला सिरमौर एवं वन विज्ञान केन्द्र, सुन्दरनगर, जिला मण्डी, (हि. प्र.) के किसानों एवं बागवानों के समूह को 24 फरवरी से 1 मार्च 2009 के दौरान नौणी विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान स्टेशन, धौलाकुंआ (पांवटा साहिब); सुशीला तिवारी हरबल उद्यान, ऋषिकेश; औषधीय पौध फार्मेसी, हरिद्वार तथा हारा फार्म, यमुनानगर का भ्रमण करवाया गया।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट ने 5 से 9 फरवरी 2009 के दौरान ''वानिकी गतिविधियों द्वारा धारणीय जीविका हेतु स्वयं सहायता समूहों की क्षमता वर्धन'' पर एक कार्यक्रम मेलंग ग्रांट में आयोजित किया।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट ने वन विज्ञान केन्द्रों में वितरण हेतु निम्नलिखित पाठ्य सामग्री तैयार की :

- **बाँस पौधशाला : तकनीकी एवं प्रयोग**
- **रतन पौधशाला एवं उसका रोपण : तकनीकी एवं प्रयोग**
- **होल्लान्ग पौधशाला : तकनीकी एवं प्रयोग**
- **अकेशिया मैन्जियम : तकनीकी एवं प्रयोग**

आदर्श ग्राम

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट द्वारा आदर्श ग्राम मेलंग ग्रांट में 22 से 25 जून 2009 तक अकेशिया मैन्जियम की पौधशाला एवं उनके वृक्षारोपण पर चार–दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरु ने बैरनहल्ली ग्राम के किसानों के लिए ''पौधशाला व्यवसाय, प्रचार–प्रसार तथा कृषि–वानिकी मॉडेल्स'' विषय पर 8 जनवरी 2009 को एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 10 किसानों ने भाग लिया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने सहभागी वन प्रबंधन परियोजना के अन्तर्गत संस्थान द्वारा ग्रामीण विकास समिति मलोह, सयूणी, जिला मण्डी (हि. प्र.) में 25 फरवरी 2009 को एक सभा का आयोजन किया। इस सभा में सांझा वन प्रबन्धन के अन्तर्गत, क्षेत्र में किये गये कार्यों तथा उससे लोगों को प्राप्त लाभ के बारे में चर्चा की गई व इस बारे में सहभागियों के विचार भी प्राप्त किए।

वन उत्पादकता संस्थान, राँची द्वारा ''केंचुआ खाद बनाने की प्रक्रिया'' विषय पर 20 अप्रैल 2009 को हापामुनी आदर्श गांव के कृषकों तथा महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया।

जैवकीय विविधता दिवस, 22 मई 2009

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौघोगिकी संस्थान, बंगलुरु; शु.व.अ.सं., जोधपुर; हि.व.अ.सं., शिमला तथा व.उ.सं., रांची द्वारा 22 मई 2009 को यू.एन.ई.पी द्वारा घोषित विषयः ''जैवकीय विविधता और आक्रामक विदेशी प्रजातियों'' पर वार्ता और वृक्षारोपण इत्यादि विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से जैवकीय विविधता दिवस मनाया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस, 5 जून 2009

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर एवं वन उत्पादकता संस्थान, राँची द्वारा 5 जून 2009 को यू.एन.ई.पी द्वारा घोषित विषयः "आपके ग्रह को आपकी आवश्यकता है–पर्यावरण परिवर्तन रोकथाम हेतु संगठित संघर्ष करो" पर जागरूगता लाने हेतु विश्व पर्यावरण दिवस, उत्साहपूर्ण तरीके से कई क्रमिक गतिविधियों के माध्यम से मनाया गया। इस सुअवसर पर एक वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

विश्व मरुप्रसार रोक दिवस, 17 जून 2009

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर ने 17 जून 2009 को यू.एन.सी.सी.डी. द्वारा घोषित विषयः "भूमि एवं जल संरक्षण : हमारा सुरक्षित सांझा भविष्य" पर जागरूगता लाने हेतु विश्व मरू प्रसार रोक दिवस समारोह उत्साहपूर्ण तरीके से कई क्रमिक गतिविधियों के माध्यम से मनाया। श्री मलखान सिंह विश्नोई, माननीय विधायक, लूनी विशिष्ट अतिथि के रूप में एवं अन्य सम्मानीय अतिथि विश्व मरू प्रसार रोक दिवस के अवसर पर उपस्थित थे।

विश्व मरू प्रसार रोक दिवस पर पत्रकों (पैम्फलेटों) का विमोचन

मेला/प्रदर्शनी

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा 22 मार्च 2009 को किसान मेला, हण्डिसर्रा, पंजाब में औषधीय पौधों पर प्रदर्शनी लगाई गई।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरु ने 22 से 27 जनवरी 2009 तक सुत्तूर (मैसूर) में आयोजित कृषि–मेले में भाग लिया एवं संस्थान की गतिविधियों को प्रदर्शित किया।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरु एवं उ.व.अ.सं., जबलपुर ने 14 से 17 फरवरी 2009 के दौरान प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित ''दिल्ली वुड 2009'' मेले में भाग लिया।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरु ने 20 से 22 मार्च 2009 तक ''प्लाई एण्ड पेनल एशिया'' एवं ''स्पेस क्राफ्टस'' द्वारा बंगलुरू के पैलेस मैदान में आयोजित ''प्लाई एण्ड पेनल एशिया 2009'' में स्टॉल लगाकर संस्थान की गतिविधियों को प्रदर्शित किया।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर ने 2 से 11 जनवरी 2009 को राज्य प्रशासन, जोधपुर द्वारा आयोजित हस्त शिल्प उत्सव की प्रदर्शनी में भाग लिया।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट ने 9 से 12 फरवरी 2009 तक हुए सातवें हस्ती महोत्सव में अपने शोध कार्यों की प्रदर्शनी लगाई।

प्रकाशन

पुस्तक

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के श्री सी. एस. डांगी एवं श्रीमती सीमा कुमार द्वारा ''वानिकी अनुसंधान विस्तार कार्यनीति एवं चुनौतियां'' शीर्षक पुस्तक का साईंटिफिक पब्लिशर, जोधपुर से प्रकाशन।

न्यूजलेटर

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने राष्ट्रीय पादप बोर्ड, आयुष विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित परियोजना ''उत्तराखण्ड के व्यापारिक रूप से महत्वपूर्ण औषधीय पादपों पर बाजार सूचना का संग्रहण एवं प्रसार'' के अन्तर्गत जनवरी 2009 में अक्टूबर–दिसम्बर 2008 की तिमाही समाचार पत्रिका ''औषधीय पादपों पर बाजार सूचना'' का प्रकाशन किया।

पत्रक (पैम्फलेट)

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर ने निम्नलिखित पत्रक प्रकाशित किए हैं :

- **शुष्क वन अनुसंधान संस्थान : एक परिचय**
- **17 जून : विश्व मरूप्रसार रोक दिवस**

उपलब्धियां

अर्जुन (टर्मिनेलिया अर्जुना) छाल का विनाशविहीन विदोहन

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा किए गए अनुसंधान द्वारा यह ज्ञात हुआ कि अर्जुन (टर्मिनेलिया अर्जुना) के मध्यम उम्र के वृक्ष उत्तम गुणवत्ता वाली छाल प्रदान करते हैं। इसमें सक्रिय रासायनिक घटकों की मात्रा अधिक होती है। छाल के विदोहन का उत्तम समय मार्च तथा अप्रैल माह है। छाल का विदोहन वृक्ष के मोटाई के 1/4 अथवा 1/3 भाग में करना चाहिए तथा छाल की बाहरी तथा मध्यम परत ही निकालना चाहिए। इस तरीके से प्रत्येक दो वर्षों में विपरीत दिशा में एक ही वृक्ष से सतत् रूप से छाल प्राप्त की जा सकती है तथा वृक्षों को विनाशवान विदोहन से बचाया जा सकता है।

अर्जुन छाल का विनाशविहीन विदोहन

बांस प्रजनन की नई तकनीक की खोज

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने बांस के पौधों की वृद्धि के लिए एक नई तकनीक का विकास किया है। इस तकनीक के प्रयोग द्वारा बांस की बारीक से बारीक कलम की एक गांठ से जड़ एवं अंकुर प्रस्फुटित करके नया पौधा तैयार करने में

नवजात कलम द्वारा बांस प्रजनन की नई तकनीक

सफलता प्राप्त हुई है। यह तकनीक अभी केवल बैम्बूसा वैलगेरिस प्रजाति में हासिल की है। बांस की अन्य प्रजातियों में भी इस तकनीक का परीक्षण किया जा रहा है। इस तकनीक द्वारा भविष्य में बांस की प्रजातियों की अधिक से अधिक संख्या में वृद्धि की जा सकेगी।

कम लागत की बाँस की झोपड़ी

बाँस का टिकाऊपन जलवायु तथा पर्यावरण पर निर्भर करता है, किन्तु खुले में तथा भूमि पर अनउपचारित बाँस की औसत आयु 1–3 वर्ष होती है। अतः बाँसों से उचित सेवा प्राप्त करने के लिए इसका परिरक्षी उपचार किया जाना आवश्यक है। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने जनजातीय क्षेत्रों के लिए एक कम लागत की बांस तथा फूस की अग्निरोधक झोपड़ी का आविष्कार किया है। इस झोपड़ी में **डैन्ड्रोंकैलेमस स्ट्रिक्टस, बेम्बूसा बालकोआ, डैन्ड्रोंकैलेमस जायजेन्टीस** तथा **बेम्बूसा पलीफॉर्मा** को प्रदूषणरहित परिरक्षी जीबॉक तथा अग्निरोधक रसायन से दबाव प्रकरण प्रक्रिया द्वारा उपचारित किया गया है तथा फूस को भी इसी परिरक्षी से डिपिंग प्रक्रिया द्वारा

उपचारित किया गया है। इसमें जीबॉक से उपचारित चीड़ के खम्भों व बत्तों का प्रयोग किया गया है तथा मिट्टी के गारे के साथ मिश्रित उपचारित छादन घास दीवारों के लिए प्रयोग की गयी है।

इन रसायनों द्वारा उपचारित करने से कोई नुकसान नहीं होता है। इस प्रकार की झोपड़ियों का तापमान गर्मियों में बाहर के तापमान से 10 से 15 डिग्री कम मापा गया है। इस झोपड़ी की लागत रू0 307/–प्रति वर्ग फुट है जिसमें से 40% मजदूरी है। अतः जनजातीय क्षेत्रों में जहाँ कि गृहस्वामी स्वयं व परिवार के सदस्यों द्वारा काम कर लेता है, झोपड़ी की लागत लगभग आधी हो जाएगी।

कम लागत की बाँस की झोपड़ी

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा वर्ष 2006–08 हेतु वानिकी में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा वानिकी में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार हेतु वर्ष 2006–08 की अवधि के लिए नामांकन/आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। ये पुरस्कार परिषद् द्वारा मौलिक और उत्कृष्ट कार्य के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों में दिये जाते हैं :

- (क) वन शिक्षा (ख) वन अनुसंधान (ग) वन विस्तार और (घ) ''वानिकी में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार''
- उपरोक्त चारों पुरस्कारों के अंतर्गत रूपये 1 लाख नगद प्रत्येक और एक प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा।
- इस विषय में अधिक जानकारी हेतु परिषद् की वेब साइट www.icfre.org अथवा www.icfre.gov.in को देखें अथवा सचिव, भा.वा.अ.शि.प. के कार्यालय से संपर्क करें।
- नामांकनों /आवेदनों की अंतिम तिथि 15 नवम्बर 2009 तक बढ़ा दी गई है।
- ऐसे आवेदक जिन्होंने पूर्व विज्ञापन के प्रत्युत्तर में इन पुरस्कारों हेतु आवेदन प्रस्तुत किया था उन्हें पुनः आवेदन प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है।

संरक्षक :

डॉ. गोविन्द सिंह रावत, महानिदेशक

सम्पादक मण्डल :

डॉ. रवीन्द्र कुमार, उपमहानिदेशक (विस्तार)

अध्यक्ष

श्री सर्वेश सिंघल, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं प्रकाशन)

मानद संपादक

श्री रमाकान्त मिश्र, अनुसंधान अधिकारी (मीडिया एवं प्रकाशन)

सदस्य

प्रेषक :

श्री सर्वेश सिंघल
सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं प्रकाशन)
विस्तार निदेशालय
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद
पो. ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
ई मेल : adg_mp@icfre.org
दूरभाष : 0135–2755221, फैक्स : 0135–2750693

- सीमित वितरण हेतु।
- 'वानिकी समाचार' में प्रकाशित सामग्री संपादक मंडल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
- प्रकाशन हेतु सामग्री मानद संपादक को प्रेषित की जा सकती है।
- डिजिटल संस्करण www.icfre.gov.in पर उपलब्ध है।

सेवा में,

_____

_____

_____

मुद्रक : अवि प्रिन्टर्स, 21, ई.सी. रोड़, देहरादून, फोनः 0135–2659970